शोध-चिंतन पत्रिका

विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका

ISSN: 2583-1860

वर्ष:6; अंक: 10-11; जुलाई-दिसंबर, 2025

शोध-सार

संपादक

डॉ. रीतामणि वैश्य

http://shodhchintanpatrika.neglimpse.com/

http://shodhchintanpatrika.neglimpse.com/ शोध-चिंतन पत्रिका ISSN: 2583-1860

शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका

वर्ष : 6 ; अंक: 10-11 ; जनवरी-दिसंबर, 2025; पृष्ठ संख्या : 01-10

अंधविश्वास और यशपाल की कहानियाँ

डॉ. ऋषिकेश श्रीवास्तव

शोध-सार :

अंधविश्वास एक ऐसी कुरीति है, जिसका खामियाजा समाज को भुगतना पड़ता है। कमोबेश, अंधविश्वास प्रत्येक समाज और समुदाय में पाया जाता है, जिसकी जड़ें बहुत गहरी हैं। इसलिए यह किसी एक राष्ट्र या समाज विशेष से सम्बंधित नहीं है, इसका स्वरूप अलग-अलग प्रांतों में भिन्न-भिन्न हो सकता है। समाज में विश्वास जितना महत्वपूर्ण है, वहीं अंधविश्वास उतना ही घातक। जब विश्वास आवश्यकता से अधिक हो जाता है, तो वही अंधविश्वास में परिणत हो जाता है। अशिक्षा, अज्ञानता, अपरिपक्वता, अनजानापन, तर्कहीनता अंधविश्वास के लिए दायी हैं किंतु, इसका यह अर्थ नहीं है कि शिक्षित समाज में अंधविश्वास नहीं होता है। व्यक्ति जब तर्कहीन होकर किसी भी मान्यता या परम्परा को मानने और उसका जीवन में व्यवहार करने लगे, तब वह अंधविश्वास के घेरे में आ जाता है। अंधविश्वास शिक्षित वर्गों में भी काफी प्रचलित है जो शोचनीय है, जनता बाहर से कैसी ही प्रगतिशील क्यों न बन जाये, उसके भीतर अंधविश्वास और अंध-पूजा की भावना बराबर बनी रहती है। लेनिन ने कभी नहीं चाहा कि उसकी पूजा हो, किन्तु उसके जीवन-काल में ही रूस की जनता उसे अवतार के रूप में पूजने लगी थी और उसकी कब्र के ऊपर वार्षिक उत्सव मनाया जाने लगा।

बीज-शब्द : *अंधविश्वास, अपरिपक्वता, तर्कहीन, सोचनीय, प्रगतिशील, घातक*

शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष : 6 ; अंक: 10-11 ; जनवरी-दिसंबर,2025; पृष्ठ संख्या : 11-24

गद्दी जनजाति की आर्थिक एवं कृषि नीति

डॉ. रवि कुमार गोंड़
डॉ. भरत सिंह

शोध-सार :

हिमाचल प्रदेश की गद्दी जनजाति का इतिहास प्राचीन है। इस जनजाति का परिचय अष्टाध्यायी 4/2/82, पाणिनी अष्टाध्यायी (600-700 ई.) के पूर्व में आता है और साथ ही राजतरंगिणी (कल्हण), 'एग्लोसरीऑफ द ट्राईब्ज एण्ड कास्ट्स' (एच.ए.रोज़, 1911), 'हिस्ट्री ऑफ पंजाब हिल्ज़ स्टेट' (जे. हिचिंस्न एंड वोगल, 1994), 'चंबा गजेटियर' (1904), भारतीय जनगणना (1901), चुराह क्षेत्र के शिलालेख (1905) आदि में भी गद्दी जनजाति की ऐतिहासिकता को देखा जा सकता है। गद्दी जनजाति के लोग आज भी अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं एवं आर्थिक व्यवस्था को बचाने में सफल रहे हैं। वे कृषि योग्य पर्वतीय भूमि में राजमाह, माह और चने की दाल आदि की खेती करते हैं साथ ही भेड़-बकरियों का पालन करते हुये अपनी आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाते हैं। पहाड़ों के कठिनतम रास्तों से गुजरते हुए और तमाम कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए गद्दी जनजाति के लोग अपनी आर्थिक व्यवस्था को मजबूती प्रदान करते हैं। आज वह शिक्षा के प्रत्येक में सफल है और सरल, सहज और उदात्त जीवन जीने के लिए यह विश्व भर में प्रसिद्ध है।

बीजशब्द : *जनजातीय समुदाय, अनुसूचित जनजाति, गद्देरण, गद्दी, गद्दियाली, सिंहासन, सांस्कृतिक विरासत, परंपरा, संस्कृति, खेतीबाड़ी, आर्थिक व्यवस्था*

शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष : 6 ; अंक: 10-11 ; जनवरी-दिसंबर,2025; पृष्ठ संख्या : 25-36

समकालीन हिन्दी कविता और नारी

डॉ. कल्पना साईकिया

शोध-सार :

साहित्य में स्त्री सदैव वर्ण्य विषय के रूप में केन्द्रबिन्दु में रही है। समकालीन हिन्दी कवियों ने नारी को देश की संस्कृति, धर्म, साहित्य एवं ज्ञान-विज्ञान का स्तंभ माना है। समकालीन हिन्दी कविता में नारी की संवेदनाएँ और अनुभव, उसके संघर्ष, प्रेम और निराशा को अत्यंत गहराई से अभिव्यक्त किया गया है। ये कविताएँ न केवल नारी के अंतर्मन की जिजीविषा, उसकी इच्छाओं और आकांक्षाओं को उजागर करती हैं, बल्कि समाज में नारी की स्थिति पर भी सवाल उठाती हैं। नारी के प्रति स्वानुभूति के पक्ष को सशक्त रूप से उजागर करने के लिए समकालीन कवियों ने नारी की समस्याओं को साहित्य में अत्यंत सूक्ष्मतापूर्वक प्रस्तुत किया है। नारी को अबला न मानकर शक्ति का प्रतीक माना गया है तथा नई सदी के प्रारंभ में नारी के विकास तथा उन्हें अधिकार-सम्पन्न बनाने के लिए प्रयास किए जा रहे है, जो समाज में नारी के प्रगति का सूचक है। स्वतंत्रता के बाद नारी को आत्मोन्नति के अधिक अवसर सुलभ हुए हैं, वह पहले से अधिक सजग, जागरूक और अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई है। अब वह पारंपरिक सामाजिक ढाँचे से बाहर निकलकर, बदलते हुए समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार खड़ी है। समकालीन रचना-जगत में नारी के प्रति इन्हीं उद्देश्यओं की पूर्ति के लिए रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं और स्त्री को उसके अपने अस्तित्व का बोध कराया है।

बीज शब्द : *समकालीन कविता, स्त्री विमर्श, सामाजिकता, कविता, जागरूकता, जिजीविषा*

शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष : 6 ; अंक: 10-11 ; जनवरी-दिसंबर,2025; पृष्ठ संख्या : 37-50

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य में युगबोध

डॉ. दीक्षा गुप्ता

शोध-सार :

हरिशंकर परसाई का हिन्दी साहित्य जगत में एक विशिष्ट स्थान है। परसाई का रचना - संसार व्यंग्य साहित्य का पर्याय-सा ही प्रतीत होता है। उनका महत्व यही है कि उन्होंने आधुनिक युग की मांग को समझा और राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक समस्त पक्षों की विकृतियों को ध्यान में रखते हुए व्यंग्य साहित्य का निर्माण किया। वे अपने संघर्षपूर्ण जीवन में साहित्य के प्रति सदैव समर्पित रहे ।

बीजशब्द : *व्यंग्य, अन्याय, शोषण, अवसरवादिता, जमाखोरी, महंगाई, भ्रष्ट आचरण, सामाजिक अंतर्विरोध, राजनीतिक विद्रूपता, रुढ़ि , अस्वीकृति, असंगति*

शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष : 6 ; अंक: 10-11 ; जनवरी-दिसंबर,2025; पृष्ठ संख्या : 51-61

‘1966 मिज़ोरम : ङिहल्ह हर कन तुआर’ उपन्यास में मिज़ो विद्रोह की पृष्ठभूमि

जूदिथ ज़ोपरी

शोध-सार :

‘1966 मिज़ोरम : ङिहल्ह हर कन तुआर’ उपन्यास मिज़ो भाषा का एक उपन्यास है, जो भारत के पूर्वोत्तर राज्य मिज़ोरम के इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटना पर आधारित है, ‘मिज़ो रमबुआई’ अर्थात् ‘मिज़ो विद्रोह’ कहा जाता है। मिज़ो विद्रोह लगभग दो दशकों (1966-1986) तक चला। मिज़ो विद्रोह मिज़ो इतिहास की सबसे भयावह तथा अशांत ऐतिहासिक घटनाओं में से माना जाता है। माफेली द्वारा लिखित ‘1966 मिज़ोरम: ङिहल्ह हर कन तुआर’ उपन्यास सन् 2010 ई. में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में मिज़ो विद्रोह के दौरान मिज़ोरम के ईस्ट लुङदार गाँव के माध्यम से भारतीय सेना और मिज़ो भूमिगत सेना, दोनों के हमलों से उत्पन्न मिज़ो लोगों द्वारा झेली गई अपार पीड़ा को तथ्यपरक एवं जीवंत रूप से चित्रित किया गया है। साथ ही, विद्रोह के दौरान अत्याचारों की सबसे बुरी शिकार महिलाओं की आवाज को भी उठाया गया है।

बीजशब्द: *पूर्वोत्तर, मिज़ो विद्रोह, पीड़ा, भारतीय सेना, मिज़ो भूमिगत सेना*

शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष : 6 ; अंक: 10-11 ; जनवरी-दिसंबर,2025; पृष्ठ संख्या : 62-70

विजयदान देथा की कहानियों में लोक जीवन

कोमल मीणा

प्रो. विपुल कुमार

शोध-सार :

विजयदान देथा की कहानियाँ लोक जीवन के बहुआयामी चित्रण का विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं। उन्हें राजस्थानी लोक साहित्य के अग्रणी स्तंभों में से एक माना जाता है । अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने ग्रामीण राजस्थान की आत्मा, संस्कृति और जनमानस को जीवंत किया है। विजयदान देथा की कहानियाँ मात्र मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि राजस्थानी लोक संस्कृति का एक प्रामाणिक दस्तावेज़ भी हैं। उन्होंने वाचिक परंपरा (कहन-शैली) में प्रचलित लोक कथाओं को अपना आधार बनाया। उन्होंने वाचिक परंपरा (कहन-शैली) को यथावत प्रस्तुत न कर, आधुनिक संवेदनशीलता और व्यापक अर्थों के साथ पुनर्सृजित किया। उनकी कहानियों में लोक जीवन का यथार्थवादी चित्रण मौजूद है, जिसमें कठोर जीवन, अभावग्रस्तता, भूख, गरीबी, और अंधविश्वासों के साथ-साथ लोक-आस्थाएँ और आपसी संबंध भी विद्यमान हैं। विजयदान देथा ने अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों और रूढ़ियों पर तीखा प्रहार किया है। उन्होंने सामंती शोषण, जातिगत भेदभाव, पुरुष-प्रधानता और धार्मिक आडंबरों को निर्भीकता से यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। साथ ही, विजयदान देथा की रचनाओं में मानवीय मूल्यों को बहुत महत्त्व दिया गया है। उन्होंने मानवीय मूल्यों जैसे - स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय और नारी स्वातंत्र्य को प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों की विशेषता यह है कि उन्होंने राजस्थानी लोक जीवन के शोषितों, पीड़ितों और हाशिए पर स्थित वर्गों को कथानक का केंद्र बनाया है, जिससे उनकी रचनाएँ अधिक प्रासंगिक और लोकपक्षधर बन गईं हैं।

बीजशब्द : *लोक, लोक संस्कृति, लोक जीवन, परंपरा, स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय, नारी स्वातंत्र्य, कहन-शैली, रूढ़ियाँ, मान्यता, अंधविश्वास, वेशभूषा*

शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष : 6 ; अंक: 10-11 ; जनवरी-दिसंबर,2025; पृष्ठ संख्या : 71- 94

शरतचन्द्र की नारी दृष्टि और 'चरित्रहीन'

सोनिया कुमारी प्रसाद

शोध-सार :

'चरित्रहीन' बांग्ला के महान उपन्यासकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित एक जनप्रिय बांग्ला उपन्यास है। नारी के शोषण, समर्पण और भाव-जगत तथा पुरुष समाज में उससे उभरने वाला अन्तर्विरोध ही इस उपन्यास का केन्द्रबिन्दु है। उन्होंने जब 'चरित्रहीन' लिखा था, तब उन्हें क़ाफी विरोध का सामना करना पड़ा था। इस उपन्यास में नारी के चरित्र के दोहरे संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

बीजशब्द : *जनप्रिय, समर्पण, अंतर्विरोध, शोषण, चरित्रहीन, केन्द्रबिन्दु*